06 / 02 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अशरीरिपन की सहज अनुभूति

➢➢ मैं आत्मा स्वयं को सूक्ष्मवतन में बापदादा के सामने देख रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं बापदादा की अति लाडली, स्नेही और सहयोगी बच्ची शक्ति स्वरूप हूँ।

→ मैं बाप समान हूँ।

→ समीप रतन हूँ।

→ बाप के साथ मेरा जो स्नेह और सहयोग का अटूट धागा बंधा है वो सदा अविनाशी है।

→ शरीर का कोई भी बंधन नही है।

- मैं बंधनमुक्त बन गयी हूँ।
- मैं योगयुक्त हूँ।
- एक बाप के साथ सच्ची प्रीत की अनुभूति कर रही हूँ।
- बाप ही मेरा एक सच्चा मीत है।
- बाप के साथ ही दिल के गीत बज रहे है।
- सहज ही अशरीरिपन की अनुभूति हो रही हूँ।

➳ _ ➳ दिल का यही गीत बज रहा है - "एक तू जो मिला सारी दुनिया मिली"

→ मैं और मेरा बाबा

→ बाबा मिला सब कुछ मिला

→ एक बाप के प्रीत के गीत में ही खोई हुई हूँ।

→ प्रीत बुद्धि बन गयी हूँ, जिसके गायन में भक्त भी कीर्तन करते है।

- मेरी प्रभु प्रीत मुझे सहज ही अशरीरिपन की अनुभूति करा रही है।
- मैं अपने सच्चे मीत के संग हूँ।
- सदा के साथी के संग हूँ।

➢➢ एक बाबा शब्द की स्मृति से ही मुझे देह और देह की दुनिया की विस्मृति होती जा रही है।

➳ _ ➳ मैं अपने अविनाशी मीत के साथ मोहब्बत के झूले में झूल रही हूँ।

→ एक सेकेंड में सहज ही अशरीरिपन की अनुभूतियों में खोने लगी।

→ सच्चे मीत के मोहब्बत में मेहनत का एहसास ही नही हो रहा है।

→ मैं बाप के द्वारा मिले अपने सर्व खजाने, सर्व प्राप्तियों को देख खुशी में झूम रही हूँ।

- मन मे गुणों के महिमा के गीत के साथ साथ खुशी के साज़ भी बज रहे है।
- मैं सहज ही लाइट स्वरूप स्थिति का अनुभव कर रही हूँ।
- मैं सहजयोगी, सहज ही यथार्थ रीति जागती ज्योति बनती जा रही हूँ।
- मैं बाप की दिलतख्तनशीन बच्ची साक्षात्कार मूरत बन गयी हूँ।